Raj Express (Indore), 17th August 2021, Page-11

अनुसंधान और विकास के प्रयोगशाला से भूमि में परिवर्तन की मांग बढ़ रही

इंदौर ■ राज न्यूज नेटवर्क

आईआईटी इंदौर और इन्क्यूबेशन सेंटर-आर.आर.केट इंदौर ने शनिवार को लैब-टू-लैंड इकोसिस्टमः चुनौतियां और अवसर बनाने पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन एसवी नाखे, निदेशक, आर.आर.केट और प्रोफसर एन.के. जैन, निदेशक (कार्यवाहक) आईआईटी इंदौर ने किया। कार्यशाला का उद्देश्य शोधकर्ताओं, इंजीनियरिंग, उद्योग विशेषज्ञों, स्टूडेंट्स और वैज्ञानिकों को लैब-टू-लैंड इकोसिस्टमः भारतीय संदर्भ में चुनौतियां और अवसर के बारे में जागरुकता पैदा करने के लिए एक साथ लाना है। वर्तमान दुनिया तेजी से विकसित हो रही प्रौद्योगिकियों और बौद्धिक संपदा द्वारा संचालित हो रही है। अनुसंधान और विकास के प्रयोगशाला से भूमि में परिवर्तन की मांग बढ़ रही है, जो मूल रुप से उद्योग, स्टार्टअप, नए उत्पादों आदि द्वारा अपनाई गई शोध है। यह लैब-भूमि परिवर्तन एक स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र के माध्यम से ही संभव है, जहां चुनौतियों को अनुसंधान एवं विकास के माध्यम से अवसरों में परिवर्तित किया जाता है।

तेजी से विकसित हो रही है दुनिया

एस.वी. नाखे ने प्रौद्योगिकी डेवलपर्स और उद्यमियों को इस मिशन में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा भारत को बेरोजगारी सहित कई ज्वलंत राष्ट्रीय समस्याओं को दूर करने के लिए उद्योगों/स्टार्टअप द्वारा प्रयोगशालाओं में विकसित प्रौद्योगिकियों को सुचारु रुप से अपनाने की आवश्यकता है। ये प्रयास सरकार की आत्मनिर्भर भारत पहल के अनुरुप हैं। भारत का और भारत के विकसित राष्ट्र बनने का एक तरीका है। प्रोफेसर एन.के. जैन ने कहा दुनिया तेजी से विकसित हो रही प्रौद्योगिकियों और बौद्धिक संपदा से प्रेरित है इसलिए प्रयोगशाला से भूमि में अनुसंधान एवं विकास के परिवर्तन की मांग में वृद्धि हुई है। हमारे पास एक पारिस्थितिकी तंत्र होना चाहिए, जहां चुनौतियों को दूर किया जा सके और आर एंड डी के माध्यम से बनाए गए अवसरों को हितधारकों द्वारा उच्च मूल्य संवर्धन की दिशा में नई तकनीक में अनुकूलित किया जा सके, कम लागत, बेहतर उत्पाद और मौजूदा उपयोग की समस्याओं का समधान। लैब प्रयोगों और नवाचार को सामाजिक रुप से प्रासंगिक उत्पादों और सेवाओं में बदला जाना चाहिए।